आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 2 अक्टूबर-2018 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

स्वदेशी गोवंश का संवर्द्धन और स्वस्थ दुग्ध उत्पादन हमारी प्राथमिकता

प्रिय, किसान और पशुपालक भाइयो और बहनों !
राम–राम सा।

देश के कुल दूध उत्पादन का 12 प्रतिशत दूध राजस्थान राज्य में होता है। दुग्ध उत्पादन में राजस्थान दूसरे स्थान पर है। राज्य में दो तिहाई दूध स्वदेशी गोवंश से प्राप्त होता है। हमारे पुरखों के सद्प्रयासों से गोवंश की स्थानीय नस्लों का विकास हुआ है। स्वदेशी गोवंश स्थानीय परिस्थितियों और जलवायु के प्रति अधिक अनुकूल है तथा कम लागत और मेहनत में अच्छी उत्पादकता देने वाला है। इनसे प्राप्त होने वाला दूध श्रेष्ठतम श्रेणी का पौष्टिक और अधिक स्वास्थ्यवर्द्धक है। स्वदेशी गायें 10–12 ब्यांत तक दूध देने की क्षमता रखती है। इनमें प्रथम ब्यांत की आयु भी तीन वर्ष से कम पाई जाती है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य की श्रेष्ठ देशी गौवंश राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी के संरक्षन और संवर्द्धन का कार्य बखूबी किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को इन केन्द्रों पर उनके स्वास्थ्य, रखरखाव और संतुलित पोषण से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में भी अच्छी कामयाबी मिली हैं। हैरिटेज जीन बैंक के तहत इनके संवर्द्धन के लिए श्रेष्ठ किस्म के नंदी राज्य की गौशालाओं, ग्राम पंचायतों और प्रगतिशील पशुपालकों को उपलब्ध करावाए जाते हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के गौशाला प्रबंधकों व डेयरी संचालकों के लिए देशी गोवंश के संवर्द्धन और वैज्ञानिक रख–रखाव के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। राज्य के 13 जिलों में स्थापित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्रों के मार्फत भी गांव–ढाणी में बैठे पशुपालकों और गोपालकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करके स्वदेशी गोवंश पालन के लिए प्रेरित किया जा रहा है। निरोगी पशुधन और स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हमारी प्राथमिकता में शामिल है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर में राज्य की पहली दुग्ध जांच प्रयोगशाला स्थापित की गई है। दूध को सर्वोत्तम संतुलित खाद्य पदार्थ माना गया है क्योंकि इसमें शरीर के लिए आवश्यक विभिन्न पोषक तत्व शरीर की आवश्यकता के अनुरूप एक निश्चित मात्रा में मौजूद होते हैं। दूध जीवाणुओं की वृद्धि के लिए एक अच्छा माध्यम होने के कारण अशुद्ध दूध मनुष्यों में रोगों का एक कारक बनता है। जीवाणुओं के उक्त दूध अथवा इससे बने उत्पादों के सेवन से मनुष्यों में कई बीमारियां हो जाती हैं। अतः जन स्वास्थ्य के मद्देनजर हमें स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्द्धक दुग्ध उत्पादन के लिए सतर्क रहने की जरूरत है। इसके लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुपालकों और गोपालकों को निःशुल्क वैज्ञानिक प्रशिक्षण और सलाहकारी सेवाओं के लिए सदैव तैयार है। जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने 5 सितम्बर 2018 को राजुवास के जामडोली स्थित स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

पशुपालन मंत्री श्री सैनी द्वारा पशुचिकित्सा महाविद्यालय जयपुर के मुख्य भवन का लोकार्पण

कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एंव मत्स्य मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने 5 सितम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान जयपुर के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर आदर्श नगर क्षेत्र के विधायक श्री अशोक परनामी और पशुपालन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री खेमराज भी लोकार्पण समारोह में सम्मिलित हुए। समारोह की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा ने की। मुख्य अतिथि कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री सैनी ने माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे का आभार जताते हुए कहा कि उनकी परिकल्पना के कारण इस महाविद्यालय का शुभारंभ हो सका है। उन्होंने बहुत ही कम समय में इतने सुन्दर भवन के निर्माण के लिये विश्वविद्यालय को बधाई दी। उन्होंने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारा लक्ष्य शिक्षा अर्जित करने के साथ ही जीवन निर्वाह करने की पद्धतियों को भी समझना है। शिक्षा के साथ–साथ हमे संस्कारवान भी बनना है। राजुवास ने स्वदेशी गौवंश के क्षेत्र में जो उल्लेखनीय कार्य किए हैं वे बहुत ही सराहनीय हैं। समारोह की अध्यक्षता करते हुए राजुवास के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि आज इस शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर इस महाविद्यालय के मुख्य भवन का लोकार्पण होना एक संयोग है। उन्होंने बताया कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान तथा प्रसार के कार्यों में अग्रणी है तथा राजुवास का यह महाविद्यालय राजधानी में स्थित होने के कारण बहुत महत्वपूर्ण है तथा भविष्य में यह राज्य में ही नहीं अपितु पूरे देश में अपनी पहचान बनायेगा। पशुपालन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री खेमराज ने अपने सम्बोधन में कहा कि शिक्षा ही समाज एवं देश को आगे बढ़ाता है। पी.जी.आई.वी.ई.आर., की अधिष्ठाता प्रो. (डॉ.) संजीता शर्मा ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

राज्य पशुपालक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री राईका ने वेटरनरी छात्रों को किया पुरस्कृत

राजस्थान राज्य पशुपालक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री गोरधन राईका ने 6 सितम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में कॉलेज स्तर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र और पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री राईका ने छात्रों का आह्वान किया कि वे दृढ़ इच्छा शक्ति के बूते अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने बताया कि विरबेक एनीमल हैल्थ इन्डिया (प्रा.लि) की ओर से आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेता अब जोनल स्तर पर प्रतियोगिता में भाग लेंगे। इसके बाद राष्ट्रीय स्तर पर निबंध लेखन प्रतियोगिता होगी। विरबेक एनीमल हैल्थ इन्डिया (प्रा.लि) के तरूण जैन भी उपस्थित थे।

आई.सी.ए.आर. के उप–महानिदेशक (शिक्षा) डॉ. राठौड़ ने राजुवास फैकल्टी को किया सम्बोधित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उप–महानिदेशक (शिक्षा) डॉ. एन.एस. राठौड़ ने 17 सितम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में डीन–डायरेक्टर और फैकल्टी सदस्यों का सम्बोधित किया और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी। कुलपति सचिवालय में आयोजित बैठक की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने की। इस अवसर पर डॉ. राठौड़ ने कहा कि यह प्रतिस्पर्द्धा का युग है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में 6 कृषि विश्वविद्यालयों में एक ही पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय जिसका कार्य क्षेत्र पूरा राजस्थान है। उन्होंने कहा राजुवास देश में एक तेज गति से बढ़ता हुआ प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। राजस्थान में पशुधन सेक्टर राज्य के किसानों और पशुपालकों की आय का एक प्रमुख जरिया है। राजस्थान मीट उत्पादन में अग्रणी राज्य है। इससे पूर्व वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने डॉ. एन.एस. राठौड़ का स्वागत किया और राजुवास की शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार गतिविधियों को पावर प्रजेन्टेशन द्वारा प्रस्तुत किया।

नोहर के स्कूली छात्र–छात्राओं ने किया राजुवास भ्रमण

हनुमानगढ़ जिले के नोहर से आए 65 स्कूली बच्चे 22 सितम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय पोल्ट्री फॉर्म में विभिन्न प्रजाति के पशु–पक्षियों की अठखेलियों से भाव–विभोर हो गए। प्रसार शिक्षा के सहायक प्राध्यापक डॉ. पंकज मिश्रा ने उन्हें पोल्ट्री में विभिन्न किस्मों की मुर्गी, बतख, खरगोश, जापानी बटेर और एमू जैसे पशु–पक्षियों के पालन और महत्व से अवगत करवाया। बालक–बालिकाओं ने राजुवास म्यूजियम में देशी गोवंश व भैंस के मॉडल, पशुपालन तकनीकें, पशुधन उत्पादों और पशुचिकित्सा और उपचार के कार्यों को रंगीन छायाचित्रों, मॉडल और चार्ट्स के माध्यम से देखा और जाना। लिटिल वर्ल्ड स्कूल नोहर के एल.एन. शास्त्री के नेतृत्व में 65 स्कूली बच्चों में 25 बालिकांए शैक्षणिक भ्रमण के दौरान यहां पंहुचे हैं।

संभाग की गोशाला व डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

राज्य के गोपालन विभाग और निदेशालय प्रसार शिक्षा, वेटरनरी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में संभाग के गौशाला प्रबंधकों व डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण 24 सितम्बर को राजुवास में सम्पन्न हो गया। बीकानेर, श्रीगंगानगर और चूरू जिलों से आए 38 संभागी इसमें शामिल हुए। प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ करते हुए वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने कहा कि गौशालाओं को गो प्रजनन केन्द्र के रूप में तब्दील किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए पशु विज्ञान के साथ जोड़कर पशुपालन किया जाना समय की मांग है। आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए गौशालाओं को स्वंय के संसाधनों को विकसित करने लिए प्रबंधकों को दया नहीं मेहनत की जरूरत है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच ने कहा कि गौशाला बिना लाभ–हानि की सेवा और डेयरी आय बढ़ाने का जरिया है। दोनों की समस्याएं अलग–अलग हैं। वैज्ञानिक पशुपोषण और गोपालन को लाभदायक बनाने के लिए राजुवास की विशेषज्ञ सेवाएं महत्वपूर्ण हैं। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक और प्रशिक्षण के समन्वयक प्रो. ए.पी. सिंह ने राजुवास द्वारा पशुपालकों को दी जा रही विशेषज्ञ सेवाओं की जानकारी देते हुए बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में गोपालन के वैज्ञानिक प्रबंधन, प्रजनन, नस्ल सुधार अधिकतम दुग्ध उत्पादन, बांझपन निवारण, संक्रामक बीमारियों के उपचार, टीकारण, पंचगव्य की उपयोगिता और औषधीय महत्व, पशु पोषण, आपदा प्रबंधन जैसे विषयों पर विशेषज्ञों की वार्ताएं और मुरलीमनोहर गौशाला, भीनासर व पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर का भ्रमण करवाया जाएगा। गोपालन विभाग के संयुक्त

वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा सहभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए

निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार शर्मा ने गोपालन विभाग द्वारा गोशालाओं और गोपालकों के हित में चलाई जा रही योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी।

विश्व रेबीज दिवस : निःशुल्क टीकाकरण शिविर
टीकाकरण ही बचाव का उपायः कुलपति प्रो. शर्मा

विश्व रेबीज दिवस (28 सितम्बर) के अवसर पर शुक्रवार को वेटरनरी विश्वविद्यालय में पालतू श्वानों का निःशुल्क एन्टी रेबीज टीकाकरण शिविर आयोजित किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा है कि विषाणु जनित रेबीज रोग पागल श्वानों के काटने से फैलने वाली एक जानलेवा बीमारी है जिसके हो जाने के बाद चिकित्सा संभव नहीं है। इससे बचाव के लिए एन्टी रेबीज टीकाकरण आवश्यक है। विश्व में रेबीज रोग से प्रतिवर्ष हजारों लोगों की मृत्यु हो जाती है। एशिया और अफ्रीका महाद्वीप इससे सर्वाधिक पीड़ित क्षेत्र हैं। रेबीज (हिड़किया) रोग के ग्रसित श्वान के काटने से यह रोग मनुष्य सहित अन्य पशु गाय, भैंस, घोड़ा, गर्दभ, भेड़, बकरी व सूअर में भी हो जाता है। वेटरनरी कॉलेज के मेडिसिन के विभागाध्यक्ष प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय और केनाइन वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में 73 श्वानों का निःशुल्क टीकाकरण किया गया। टीकाकृत श्वान को नगर निगम की ओर से जारी रेबीज टोकन भी प्रदान किए। भारत सरकार के अधिनियम–1959 के अनुसार श्वान रखने वाले श्वानपालक के पास यह टोकन होना जरूरी है। पूर्व में पंजीकृत श्वानों के टोकन का नवीनीकरण भी किया गया। केनाइन वेलफेयर सोसायटी सचिव प्रो. अनिल आहूजा ने बताया कि शिविर में श्वानपालकों को रेबीज के प्रति जागरूक करने के लिए मुद्रित सामग्री प्रदान कर फिल्म शो का प्रदर्शन भी किया गया।

राजुवास प्रदर्शनी में स्वदेशी गौवंश को दिया प्रोत्साहन

29 सितम्बर को केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर–टोंक में आयोजित राष्ट्रीय भेड़–ऊन व किसान मेले में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास की प्रदर्शनी में मॉडल के माध्यम से स्वदेशी गौवंश को प्रदेश में बढावा देने के लिए कृषकों को प्रेरित किया गया। राज्य की 6 स्वदेशी नस्लों में राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी के आकर्षक मॉडल रख कर उनकी विशेषताओं की जानकारी दी गई। इस प्रदर्शनी को केन्द्रीय कृषि मंत्री श्रीमान राधामोहन सिंह, कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी, के अलावा स्थानीय विधायक सहित हजारों की संख्या में कृषकों व पशुपालकों ने अवलोकन कर जानकारी ली। पशुओं के उन्नत आहार प्रबंधन, नस्ल संवर्द्धन, पशु

केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह को प्रदर्शनी स्टॉल में जानकारी देते हुए राजुवास के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

स्वास्थ्य और उनका रख–रखाव, स्वदेशी गौवंशों की उपयोगिता और पालन के विषयों पर रंगीन मॉडल, फ्लेक्स और आकर्षक चित्रों का प्रदर्शन कर उपयोगी जानकारी दी। प्रदर्शनी स्टॉल में आने वाले सभी पशुपालकों/कृषकों को मुद्रित पशुपालन नए आयाम पत्रिका का वितरण किया गया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी, चूरू द्वारा 225 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 6, 7, 10, 18, 22 एवं 24 सितम्बर को गांव राणासर बीकान, दूलरासर, रूपलीसर, मालकसर, झाड़सर–कांदलान एवं भनीण गांवों में तथा दिनांक 27 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 162 महिला पशुपालकों सहित कुल 249 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 178 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 11, 12, 14 एवं 16 सितम्बर को गांव 3 बीपीएम (हरदासवाली), बीरवाना, लूनेवाला एवं केसरीसिंहपुर गांवो में तथा 10 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 31 महिला पशुपालकों सहित कुल 178 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 10, 11, 12, 14, 15, 17 एवं 18 सितम्बर को ग्राम धामसरा, मामावली, सिवेरा, भामरा, गोडाना, ध्रुबाणा, मलावा और ढांगा गांवो में एवं 25 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 256 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 7, 10, 11, 12, 13 एवं 22 सितम्बर को गांव राजोद, खिंयाला, दुगोली, गौराउ, सांवराद, रोटु एवं कुसुम्बी गांवों में तथा दिनांक 4 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 34 महिला पशुपालकों सहित 213 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 15, 20 एवं 22 सितम्बर को गांव गणेशपुरा, सरसून्दा एवं पारा गांवों में एक

दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 104 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 6, 11, 15 एवं 24 सितम्बर को गांव डाबेला, सुलई पगारा, नयागांव, खेरवाड़ा सिंदडी एवं बस्सी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 7, 10, 12, 13, 14, 15, 18, 20 एवं 22 सितम्बर को गांव मोरोली,नंगला टांदू, बस सांवत, बीकरू, नगला मैथना, कटकर, गूजर बलाई, हारोली एवं मूडिया गांवों में एवं दिनांक 24 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 13 महिला पशुपालकों सहित कुल 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 13, 14, 15, 17, 18, 22 एवं 24 सितम्बर को गांव हनुमानपुरा, सरोली, टोपा, इन्दोकिया, सुखनिवासपुरा, चिरोज एवंदेवली भांची गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 235 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 13, 15, 17 एवं 18 सितम्बर को गांव केसरदेसर जाटान, केसरदेसर बोरान, गेसूरा एवं सुई गांवो में तथा केन्द्र परिसर में दिनांक 6–7 सितम्बर को दो दिवसीय एवं 20 सितम्बर को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 211 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 264 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 7, 12, 15, 17, 18, 20, 22 एवं 25 सितम्बर को गांव दोलतपुरा, रानीपुरा, काछोलिया, कुराड़, परलिया, चोमा कोट, गिरधरपुरा एवं दूड़ी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 264 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 5, 7, 20 एवं 22 सितम्बर को गांव नपानीया, जालमपूरा, कूथना एवं सेहनवा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 121 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 385 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 10, 11, 12, 13, 14, 15, 17 एवं 24 सितम्बर को गांव भागीरथपुरा, पूठपुरा, नंगू का नगला, सुरजपुरा, सेमर का पुरा, लालपुर, दिहोली एवं आंगई गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 385 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी व प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 4 सितम्बर को गांव सागड़ा में एक दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा दिनांक 10, 15, 17, 18, 20 एवं 22 सितम्बर को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस शिविर में 32 तथा प्रक्षेत्र दिवस में 170 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

बदलते मौसम में पशुओं की देखभाल कैसे करें

इस वर्ष सितम्बर के अंतिम दिनों तक पूरे राज्यभर में कहीं कम तो कहीं अधिक वर्षा का दौर जारी रहा है। इस वर्षा से मौसम में काफी बदलाव आ गया हैं जहां नमी के साथ–साथ रात के समय विशेषकर प्रातःकाल सर्दी का एहसास होने लगा हैं। ऐसे मौसम में पशुपालकों को चाहिये की वे अपने पशुओं की देखभाल अच्छी तरह से करें। इस मौसम में कुछ विषाणुजनित रोग विशेषरूप से उभर कर आते है जिनमें खुरपका–मुंहपका, माता रोग, एफिमेरल (तीन दिन का बुखार) व पीपीआर रोग मुख्य है। खुरपका–मुंहपका गाय, भैंस, भेड़, बकरी सभी प्रकार के पशुओं को प्रभावित करता है। माता रोग सामान्यत भेड़, बकरियों को प्रभावित करता है जबकि तीन दिन का बुखार गाय, भैंस को ज्यादा प्रभावित करता है। पीपीआर रोग भेड़, बकरियों को ही प्रभावित करता है जो कि एक खतरनाक रोग है और इस रोग से प्रभावित पशु की मौत लगभग निश्चित होती है। विषाणुजनित रोगों से बचाव के लिए प्रभावित पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से पृथक कर दें ताकि रोग का फैलाव रुक सके। खुरपका–मुंहपका, माता रोग व पीपीआर से बचाव के लिए टीके (वैक्सीन) उपलब्ध हैं। अतः पशुपालकों को चाहिये कि समय पर इन रोगों से बचाव के लिए वैक्सीन लगवायें।

बदलते मौसम के समय में न्यूमोनिया से भी पशु प्रभावित हो सकते हैं। इस रोग से बचाव के लिए पशुओं को रात के समय छाया अथवा छप्पर के नीचे बांधे और बीमार होने की स्थिति में जल्दी से जल्दी पशु चिकित्सकों से मिलकर इलाज करायें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

संक्रामक रोग : एक परिचय

हमारे देश में संक्रामक रोगों के कारण प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में पशुओं की मृत्यु हो जाती है तथा जो इन बीमारी से बच जाते हैं, उनकी उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। प्रमुख संक्रामक बीमारियों के उपचार की अपेक्षा टीकाकरण सबसे सस्ता एवं कारगर उपाय है।

बीमार पशुओं की सामान्य पहचान

- पशु की गति, चाल, व्यवहार तथा हाव–भाव में परिवर्तन आना।
- चारा न खाना, जुगाली न करना तथा अन्य पशुओं से अलग रहना।
- दुग्ध उत्पादन में गिरावट आना।
- कान तथा गर्दन नीचे करके खड़े रहना।
- सुस्त रहना, बाल खड़े, त्वचा का सूखापन तथा लचीला न होना।
- शारीरिक तापक्रम, नाड़ी गति एवं श्वांस गति में परिवर्तन होना।
- आंख, नाक व मुंह से द्रव्यों का बहना।
- अधिक पतला अथवा कड़ा गोबर होना।
- आंखों से कीचड़ आना।
- मद चक्र समय पर न आना।
- शुष्क थूथना।
- लंगड़ा कर चलना।
- वजन गिरना अथवा वृद्धि रूक जाना।

पशुओं के प्रमुख संक्रामक रोग

गला घोंटू (एच.एच.) : यह रोग पशुओं को बरसात में अधिक होता है। बीमारी में पशुओं को तेज बुखार होता है और वह खाना–पीना छोड़ देता है। धीरे–धीरे गले में सूजन हो जाती है। सूजन के कारण सांस लेने में परेशानी होने लगती है जिसके कारण पशु मुंह खोलकर सांस लेते है और घर्र–घर्र की आवाज होती है। बचाव के लिए 4 माह के ऊपर के सभी पशुओं को वर्ष में एक बार टीकाकरण कराया जाना चाहिए। उपचार हेतु पशु–चिकित्सक से सलाह लें।

खुरपका– मुंहपका रोग (एफ.एम.डी.) : यह बीमारी गाय, भैंस में बड़ी शीघ्रता से फैलती है तथा एक प्रकार के विषाणु से उत्पन्न होती है। यह रोग गाय, भैसों के अतिरिक्त भेड़, बकरियें व सूकरों में भी होती है। इस बीमारी में जीभ के नीचे मसूड़ों, थनों तथा खुरों में छोटे आकार के छाले/फफोले पड़ जाते है। पशुओं को तेज बुखार होता है व जुगाली करना बन्द कर देते हैं। दूध उत्पादन भी कम हो जाता है। पशुओं के मुंह से लार गिरने लगता है। थनों पर छालों से

कभी–कभी थनैला की बीमारी भी हो सकती है। बछड़ों में यह बीमारी घातक रूप ले लेती है जिससे मृत्यु हो जाती है। ग्याभिन पशुओं में गर्भपात भी हो सकता है।

लंगड़ी (ब्लैक क्वार्टर) : यह रोग गाय एवं भैंसों में जीवाणु से होता है। यह बीमारी भी बरसात के समय अधिक होती है विशेष रूप से छोटी उम्र के पशुओं में। कभी–कभी अगले पैरों की मांसपेशियां सूज जाती है तथा काले रंग की हो जाती है जिसे दबाने पर किड़किड़ की आवाज आती है। पशु चलने में काफी परेशानी महसूस करता है। पशु को तेज बुखार हो जाता है। ऐसे पशुओं का गोबर सफेद झिल्ली से ढका रहता है। उचित समय पर इलाज न मिलने पर पशु अत्यधिक कष्ट का अनुभव करता है तथा पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

प्लीहा/तिल्ली या बागी रोग (एन्थ्रैक्स) : यह रोग जीवाणु से होता है तथा तीव्रता से बढ़ने वाला छूत का रोग है। यह रोग पालतू पशुओं जैसे गाय, भैंस, भैंड़, बकरी, घोड़ा आदि के अतिरिक्त इन पशुओं के संसर्ग में रहने वाले मनुष्यों को भी रोग हो जाता है। इसका जीवाणु (बैसिलस एन्थ्रेसिस) वर्ष पर्यन्त मिट्टी, गोबर, चमड़े व हड्डियों में जीवित रहता है। उचित वातावरण मिलने व रोगी पशुओं के सम्पर्क में आने पर स्वस्थ पशु भी बीमारी से संक्रमित हो जाते हैं। यदि कोई पशु अधिक ज्वर से मर जाये और मरने के बाद उसके शरीर के प्राकृतिक गुहाओं से रक्तस्त्राव होता रहे तो पशु को प्लीहा रोग होने की सम्भावना रहती है। कभी–कभी ऐसा भी देखा जाता है कि जानवर की कुछ ही घण्टों में मृत्यु हो जाती है परन्तु किसी–किसी जानवर में यह बीमारी कई दिनों तक रहती है। इस प्रकार के रोग ग्रसित जीवित पशुओं की चिकित्सा अवधि में विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि ऐसे संक्रमित पशुओं से स्वस्थ पशुओं एवं मनुष्यों में भी रोग फैलने की सम्भावना बनी रहती है।

डॉ. कमल पुरोहित, डॉ. परमजीत सिंह,
वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र,
बाकलिया–लाड़नू मो. : 9929994666

राज्य पशु ऊंट में होने वाले रोग और उनसे बचाव के तरीके

देश में ऊंटों की संख्या में राजस्थान प्रथम स्थान पर है। 19वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में लगभग 3.25 लाख ऊंट हैं। ''रेगिस्तान का जहाज'' कहलाने वाला ये पशु किसी भी विकट परिस्थितियों में जिंदा रह सकता है। 30 जून 2014 को राजस्थान सरकार ने ऊंटों के संरक्षण के लिए ऊंट को राज्य–पशु का दर्जा दिया है। ऊंटों में प्रजनन को बढ़ावा देने के लिए ''उष्ट्र प्रजनन प्रोत्साहन योजना'' के अंतर्गत ऊंटनी के ब्याने पर तीन किश्तों में कुल 10,000 रूपये की आर्थिक सहायता दी जाती है। ऊंटनी के दूध का औषधिय महत्त्व होता है, इसका उपयोग मधुमेह, दमा, पीलिया, तपेदिक और एनीमिया में लाभदायक बताया गया है। ऊंटपालन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष बीकानेर में ''ऊंट महोत्सव'' का आयोजन होता है जिसमें ऊंट की सजावट, बाल–कतरन डिजाइन और ऊंट नृत्य के लिए पुरस्कार दिए जाते हैं।

ऊंट को दिया जाने वाला आहार एवं प्रबंधन :– ऊंटों को रोगों से बचाने के लिए संतुलित एवं पौष्टिक आहार दिया जाना चाहिए। सान्द्र आहार में 2 प्रतिशत मिनरल मिक्सचर भी मिलाना चाहिए। मटर का भूसा, मूंग–मोठ और ग्वार चारा, सरसों एवं तारमीरा इत्यादि खिलाया जाता हैं। इसके अलावा मक्का, जई, बाजरा, जौ, गेंहू की चोकर एवं पिसे हुए चने के साथ आहार में नमक आवश्यक रूप से मिलाना चाहिए। ऊंट को प्रतिदिन 20–40 लीटर पीने का साफ पानी दिया जाना चाहिए। ऊंट के आवास की साफ–सफाई की जानी चाहिए। हर 3 माह के अन्तराल पर कृमिनाशन करवाया जाना चाहिए।

ऊंट में वैसे तो बहुत सारे रोग होते हैं परन्तु मुख्यतयाः इन दो रोगों के बारे में जानना आवश्यक हैं :–

सर्रा रोग :– सर्रा रोग को 'तिबरसा' और 'गलत्या' नाम से भी जाना जाता है। यह रोग रक्त परजीवी ''ट्रिपेनोसोमा इवांसाई'' से होता है। यह परजीवी, रक्त चूसने वाली मक्खी 'टेबेनस' के काटने से फैलता है। इस रोग के प्रमुख लक्षणों में बुखार, एनीमिया और दुर्बलता प्रमुख है। लम्बे समय तक चलने वाली इस बीमारी में कूबड़ भी गायब हो जाता है और जांघ की पेशियों का भी अपक्षय होता है। कभी कभी ऊंट के पूरे शरीर पर सूजन आ जाती है एवं कॉर्निया अपारदर्शी हो जाती है।

ऊंट में सर्रा रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। वेटरनरी डॉक्टर की सलाह पर प्रयोगशाला में ताजा रक्त के नमूने अथवा रक्त स्मीयर की 'जीम्सा स्टेंनिंग' करके सूक्ष्मदर्शी में परजीवी की उपस्थिति सुनिश्चित की जाती है। सर्रा रोग की पहचान होते ही पशु चिकित्सक से उपचार

करवाना चाहिए। राजस्थान सरकार ने भी ''सर्रा नियंत्रण कार्यक्रम'' चला रखा हैं।

सर्रा से बचाव के तरीके –

1. ऊंट के आवास की साफ–सफाई रखी जानी चाहिए तथा ऊंट को मक्खियों मुख्यतः टेनेबस मक्खी से बचाना चाहिए। कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए।
2. सर्रा रोग बाहुल्य क्षेत्रों में पशु चिकित्सक की सलाह पर 'एंट्रीसाइड प्रोसाल्ट' इंजेक्शन लगाकर भीऊंटों को सर्रा रोग से बचाया जा सकता है।

मेन्ज अथवा खाज – ऊंटों में मेन्ज का रोगकारक ''सार्कोपटीज केमेली'' होती है। ये रोग ज्यादातर सर्दियों में होता है। रोग ग्रसित भाग के बाल उड़ जाते हैं, चमड़ी काली पड़ जाती है और ऊंट अपने शरीर को किसी दीवार से रगड़ता है। मेन्ज रोग की पहचान के लिए प्रयोगशाला में रोग ग्रसित भाग की, त्वचा की खुरचन को 10 प्रतिशत पोटेशियम हाइड्रोक्साइड विलयन में 24 घंटे रखकर उसके पश्चात् सूक्ष्मदर्शी में सार्कोपटीज माईट की उपस्थिति देखी जाती है। रोग के उपचार के लिए पशु चिकित्सक की सलाह पर 0.25 से 0.75 प्रतिशत ''सुमीथिओन'' विलयन का स्प्रे पम्प से पहले दिन शरीर के आधे भाग पर और दूसरे दिन शेष भाग पर छिड़काव किया जाता है।

मेन्ज से बचाव के तरीके :–

1. ऊंट के शरीर की साफ–सफाई रखी जानी चाहिए।
2. पशु चिकित्सक की सलाह पर 'आईवरमेक्टिन' इंजेक्शन लगाया जा सकता है, जिससे अन्तः और बाह्य परजीवी दोनों से बचाव हो जायेगा।

–डॉ. नेहा शर्मा, डॉ. सोनिका ग्रेवाल, डॉ. दिनेश जैन,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर
मो. : 9413300048

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अक्टूबर, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, झुंझुनू, धौलपुर, सवाई–माधोपुर, अलवर, जयपुर, बांसवाड़ा, अजमेर, बीकानेर, चूरू
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी, भेड़	हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, सवाई–माधोपुर, सिरोही, पाली, जयपुर, श्रीगंगानगर, जोधपुर
चेचक (Pox)	बकरी, भेड़	जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, अलवर, नागौर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, अलवर, धौलपुर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, भरतपुर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस (Pneumonic Pasteurelosis)	गाय, भैंस,	सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, बांसवाड़ा, भरतपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस, गाय	जैसलमेर, जयपुर, बीकानेर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़
फड़किया (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, धौलपुर, भीलवाड़ा, अलवर, भरतपुर
Enzootic Abortion in Ewes/ Chalmydial Abortion	भेड़	बीकानेर, नागौर
सर्रा (तिबरसा) (Trypanosomiasis)	ऊंट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड, पाली
रक्त प्रोटोजोआ थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस (Theileriosis and Babesiosis)	भैंस, गाय	बांसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, जयपुर, पाली, चूरू, अलवर
अन्तः परजीवी (पर्ण–कृमि, गोल–कृमि, फीता–कृमि)	बकरी, भेड़, ऊंट, भैंस, गाय	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर, बीकानेर, उदयपुर, चूरू,
खुजली (Mange)	ऊंट, बकरी	बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, पाली, झुंझुनू, जोधपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी
भैंस पालन से मनवर खां हुए निहाल

नागौर जिले के निमोद गांव के मनवर खां ने आरएसी से सेवानिवृत्ति के बाद भैंस पालन शुरू कर जो मुकाम हासिल किया वह दूसरों के लिये प्रेरणादायी है। उनकी रूचि हमेशा से पशुपालन के प्रति रही थी। अतः सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने पशुपालन को व्यवसाय के रूप में शुरू करने की ठान ली। इसी उद्देश्य से भैंस पालन के लिए उन्नत एवं उचित तकनीकी जानकारी लेने के लिये वे पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण व अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया में पहुंचे। वीयूटीआरसी बाकलिया के वैज्ञानिकों द्वारा उन्हें भैंस पालन की समुचित जानकारी उपलब्ध कराई गई। भैंस पालन शुरू करने के बाद उन्हें समय–समय पर ओर भी पशुपालन संबंधित उन्नत तकनीकों के बारे में अवगत कराया गया। टीकाकरण, कृमिनाशी दवाओं के उपचार, खनिज मिश्रण और संतुलित पशु आहार का महत्व समझाया। मनवर खां ने चार वर्ष पहले भैंस पालन शुरू किया तब उनके पास मात्र चार भैंसें थी। आज उनके पास 42 भैंसें हैं। जिनमें 15 अभी दुधारू हैं व शेष 27 गर्भित हैं। अभी वे 200 लीटर दूध प्रतिदिन 50 रूपये प्रति लीटर के हिसाब से विक्रय करके आमदनी कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने 4 मजदूरों को भी रोजगार दे रखा है जो भैसों की देखभाल एवं उनके खान–पान, साफ–सफाई आदि कार्य करते हैं। मनवर खां ने भैंस पालन अपनाकर सफलता की नई ऊंचाई को छूआ है। वह अन्य लोगों के लिये प्रेरणा के स्त्रोत बने हैं। **(मनवर खां मो.नं. 9460100495)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

पशु उत्पादों का प्रबंधन कर बढ़ाएं अपनी आय

निदेशक की कलम से...

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों !

हमारे देश में पशुपालन का व्यवसाय प्राचीन काल से ही आय का प्राथमिक स्त्रोत रहा है। कृषकों की आय को बढ़ाने के लिए पशुपालन और उसका कुशल प्रबंधन महत्वपूर्ण होता है। पशुपालन के अन्तर्गत दुग्ध व्यवसाय सबसे ज्यादा किया जाने वाला व्यवसाय है। भारत पूरे विश्व के कुल दुग्ध उत्पादन का 20.2 प्रतिशत योगदान करता है और दुग्ध व्यवसाय कुल पशुपालन व्यवसाय का 67 प्रतिशत योगदान करता है तथा यह 6.4 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रहा है। भारत वर्ष में कुल गायों और भैंसों की संख्या क्रमशः 190.90 मिलियन और 108.7 मिलियन है। कृषकों की आय में दुग्ध व्यवसाय का प्रमुख योगदान होने के बावजूद कुछ कमियों के कारण यह व्यवसाय पशु संख्या के अनुरूप शीर्ष उत्पादन पर नहीं पहुंच पाया है। इसके प्रमुख कारणों में उचित प्रबंधन, रख–रखाव व चारे की कमी, जलवायु परिवर्तन, उन्नत तकनीकी ज्ञान, पशुपोषण का अभाव और कृत्रिम गर्भाधान की जानकारी का नहीं होना है। दुग्ध व्यवसाय बढ़ाने के लिए सामूहिक पशुपालन विधि का उपयोग लाभकारी होता है जिसमें पशुपालकों का एक समूह अपने पशुओं को एक ही स्थान पर लाकर इसका प्रबंधन व रख–रखाव करते हैं। वे पशु उत्पाद से प्राप्त आय को आपस में वितरित कर लेते हैं। एकीकृत कृषि के अन्तर्गत दो या दो से अधिक कृषि तन्त्रों को सामूहिक रूप से प्रबंधित किया जाता है। उदाहरण के लिए दुग्ध व्यवसाय के साथ फसल उत्पादन व कुक्कुट पालन व्यवसाय को एकीकृत किया जा सकता है। ऐसे ही अनेक प्रकार के मेल बनाए जा सकते हैं जैसे कि दुग्ध व्यवसाय, फसल उत्पादन, कुक्कुट पालन व खरगोश पालन, मधुमक्खी व भेड़ बकरी पालन को भी एकीकृत किया जा सकता है। एकीकृत कृषि के सिद्धांत के अनुसार एक प्रकार की कृषि से प्राप्त उत्पादन को दूसरी प्रकार की कृषि में निवेशित किया जाता है। इसके अलावा पशुओं का मल–मूत्र विभिन्न प्रकार के उर्वरक तत्वों एवं खनिज लवणों से युक्त होता है। इसकी खाद बनाकर विक्रय से आमदनी प्राप्त की जा सकती है। बायोगैस तकनीक का उपयोग भी इंधन के लिए किया जा सकता है। एक गाय औसतन 18–30 किलो मल व भैंस 25–40 किलोग्राम तक मल प्रतिदिन देती है। इसका खाद प्रबंधन करके हम आय का स्त्रोत बना सकते हैं। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अक्टूबर, 2018** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर साय: 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. धर्मसिंह मीणा** **9214250161** विभागाध्यक्ष, मेडिसन विभाग, पी.जी.आई.वी.ई.आर, जयपुर	पशुपालन का वर्तमान परिदृश्य और सम्भावनाएं	04.10.2018
2	**डॉ. सुरेश झीरवाल** **9414242872** पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	ग्रामीण परिवेश में पशुओं के आपात रोगों का प्रबंधन	11.10.2018
3	**डॉ. रूचि मान** **9530073780** पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बदलते तापमानों का पशुओं पर प्रभाव	18.10.2018
4	**प्रो. त्रिभुवन शर्मा** **9414264997** अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	विश्वविद्यालय की पशुपालकों के लिए उपयोगिता	25.10.2018

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224